Manmin News [HINDI]

उठ प्रकाशमान हो, (यशायाह 60:1)•पवित्र आत्मा और अनुग्रह से भरी हुई कलीसिया • प्रेम में एकत्रित कलीसिया • परमेश्वर के वचन अनुसार चलने वाली कलीसिया•परमेश्वर पर विश्वास रखने और उसकी आज्ञा मानने वाली कलीसिया

NO. 35

जिस प्रकार जल समुद्र पर छा जाता है, वैसे ही मानमिन-सेवकाई बिना रूके अग्रसर है।

हम कलीसिया की 29वीं वर्षगांठ पर एक अति उत्तम स्वर्गिक जगत में आप सबका अभिनन्दन करते हैं।

मानमिन सेन्ट्रल चर्च ने अपनी 29वीं वर्षगांठ उस समय मनाई जब फल और अनाज पक कर गिरने लगते हैं। शुक्रवार, 7 अक्टूबर को एक समारोह मनाया गया जो वर्षगांठ की संध्या रहा और रविवार 9 अक्टूबर वर्षगांठ सेवकाई और प्रदर्शन समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। कलीसिया ने अपनी प्रारम्भिक स्थापना सभा का आयोजन 10 अक्टूबर 1982 में कलीसियाई नारे "उठो, प्रकाशमान हो" से किया था और पिछले 29 वर्षों से राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सुसमाचार के प्रचार–प्रसार को पूरा किया जा रहा है।

कलीसिया के सदस्यों ने सारी महिमा पिता परमेश्वर को दी जिसने उनको अपने हाथ से गार्मदर्शन किया और उन्हें यह सब करने के लिए आशीषित किया है। वरष्ठि पास्टर जैरॉक ली अपनी सेवकाई केवल विश्वास से करते आ रहे हैं। अब कलीसिया की लगभग 9,000 शाखाएं हैं और विश्वभर में सहायक कलीसियाएं अनगिनत आत्माओं को पवित्र आत्मा के ज्वलंत कार्यों द्वारा छूटकारे के मार्ग पर अगुवाई कर रही हैं। परमेश्वर से मिलने से पूर्व वह सात वर्षों तक कई रोगों से पीड़ित थे। परन्तु जीवित परमेश्वर से भेंट हो जाने पर सारी बीमारियों से चंगाई प्राप्त किया। तभी से, उन्होंने किसी चीज की अपेक्षा परमेश्वर से अधिकतम प्रेम किया, विश्वास के द्वारा कलीसिया की नींव डाली, और अत्याधिक बढ़ोत्तरी और जागृति प्राप्त की। अब उनके द्वारा आरम्भ की हुई कलीसिया एक विशाल कलीसिया है और चंगाई और उदारता के कार्य कर रही है। अपने निरन्तर उपवास और प्रार्थना के माध्यम से वे पवित्र आत्मा की प्रेरणा पाकर बाइबल के पदों के अर्थ प्राप्त कर चुके हैं। इसी के द्वारा, उन्होंने अपने संदेशों से बहुत से आत्माओं को सिद्ध छुटकारे के पथ पर मार्गदर्शन किया है। पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा चिन्ह एवं चमत्कार जो उन्होंने प्रदर्शित किए उसके द्वारा उनकी कलीसिया के सदस्यों में विश्वास बढ़ा है। वे अनवरत उत्साही प्रार्थना में संलग्न होकर पवित्र वचनानुसार चलते हैं। वे कलीसिया में एकत्र होकर आनन्द करते हैं और प्राचीन कलीसिया के सदस्यों की भांति स्वर्गीय राज्य की आशा से भरपूर हैं (संबधित स्तम्भ पृष्ठ 2–3)। सन् 1993 में, मानमिन सेन्ट्रल चर्च को क्रिश्चियन वर्ल्ड मैगजीन (US) द्वारा विश्व की विशिष्ट 50 कलीसियाओं में चयनित किया गया था।

सन् 2000 से, कलीसिया वैश्विक लक्ष्य में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर समारोह करके अगुवाई कर रही है। यहाँ तक कि उन देशों में जहाँ इस्लाम, हिन्दुत्व तथा बौद्ध धर्मों का बोल बाला है, वहां कलीसिया ने प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया है और पवित्र आत्मा के कार्य प्रदर्शित कर के सिद्ध कर दिया कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर जीवित है। ऐसे समारोहों में असंख्य लोगों ने मसीहत को ग्रहण किया। अन्य सामर्थ्यी कार्य जैसे अन्धे देखने लगे, बधिर सुनने लगे, लंगड़े कूदने लगे और ठीक से चलने लगे और मुर्दे जीवित हो उठे यह सब निरंतर होते रहे हैं (सम्बधित स्तम्भ पृष्ठ 4–5)। विशेषकर, बहुत से लोगों ने जून 2011 में हुई दिव्य चंगाई सभा में अपनी कमजोर दृष्टि से चंगाई की गवाही देकर परमेश्वर को महान महिमा दी। (सम्बन्धित स्तम्भ पृष्ठ 8)

मई 1998 में, परमेश्वर ने सूर्य के तथा मानमिन चर्च के ऊपर वृत्ताकार वर्षाधनुष के एक चिन्ह स्वरूप प्रगट किया कि "परमेश्वर मानमिन कलीसिया" के साथ चलता है। तीन परीक्षाओं पर सफलता पाने के पश्चात जो परमेश्वर के द्वारा विश्वास और भलाई से घटीत थे, 5 मार्च, 2000 को मुआन मानमिन चर्च में समुद्र के खारे पानी को मीठे पानी में परिवर्तित कर दिया। इस चिन्ह के आरम्भ होने से निरन्तर पवित्र आत्मा की सृजन–सामर्थ्य तथा विस्फोटकीय सामर्थ्य अब तक जारी है। 220 देशों के लोग एक साथ मानमिन टीवी तथा इन्टरनेट से ग्लोबल क्रिस्चियन नेटवर्क के माध्यम से कलीसिया की उपासना सभाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। यहाँ तक कि प्रत्येक वर्ष आयोजित वर्ल्ड क्रिस्चियन डाक्टर्स नेटवर्क (WCDN) के समारोहों में चिकित्सा प्रणाली के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य को सत्यापित भी किया जा चुका है। यूरीम प्रकाशन डॉ. जैरॉक ली की पुस्तकों को विश्वभर में विभिन्न भाषाओं में बांटा है।

मानमिन इन्टरनैशनल सेमिनरी (एमआईएस) ने दुनिया भर में पास्टर्स और कलीसिया के अगुवों में पवित्र सुसमाचार को प्रसारित किया है। (सम्बधित स्तम्भ पृष्ठ 6–7)।

इसी बीच कलीसिया ने अपनी वर्षगांठ संध्या का कार्यक्रम 7 अक्टूबर को संध्या 9.30 बजे मनाई, उसी दिन 22 मिनट के लिए 3डी विडियो, जहाँ स्वर्ग के सौन्दर्य को आउट डोर इवेन्टहॉल में दिखाया गया। शुक्रवार पूर्ण रात्री सभा के दूसरे भाग में निस्सी ऑर्केस्ट्रा, शालोम कोएर, तथा पर्फोमेन्स आर्ट कमेटी की मण्डली ने अपने आयोजनों व प्रस्तुतियों से स्वर्गीय छटा बिखेरी। 9 अक्टूबर को कलीसिया ने "स्वर्ग" शीर्षक से अपनी 29वीं वर्षगांठ समारोह सेवा मनाई। आयोजन "चरवाहे का गढ़ नया यरूशलेम" शीर्षक से सम्पन्न हुआ जिसमें कला आयोजन समिति के सदस्यों सहित 100 लोगों ने आयोजन के प्रति स्वयं को समर्पित किया और स्वर्ग के सर्वोत्तम वासस्थान नये यरूशलेम की छटा को नृत्य और स्तूति के माध्यम से प्रस्तूत कर परमेश्वर की महिमा की और नये यरूशलेम को दर्शाया।

अनाज्ञाकारिता के कारण मनुष्य ने मृत्यु का सामना किया।

1. मनुष्य शासन करने और अधीन में करने के लिए आशीषरत था।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया और उसे पृथ्वी को अपने अधीन में करने और पृथ्वी के सारे जीव जन्तु पर शासन करने का अधिकार दिया। यह प्रक्रिया उत्पत्ति अध्याय 2 में विस्तार रूप से दर्ज कि गई है। परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया तब परमेश्वर ने मनुष्य को अदन की वाटिका में रखा जहाँ पर स्वादिष्ट फलों के साथ खुबसुरत पेड़ भी बढ़ रहे थे।

परमेश्वर ने आदम को अदन की वाटिका पर शासन करने और उसकी सुरक्षा करने के लिए दिया परन्तु एक आज्ञा भी दी। परमेश्वर ने कहा "तु वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है। लेकिन भले और बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी ना खाना क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:16–17)

और परमेश्वर ने सोचा कि मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है इसलिए परमेश्वर ने एक सहायक बनाया जो मनुष्य से मेल खाती थी। परमेश्वर ने मनुष्य की एक पसली को निकाला और उससे स्त्री को बनाया, फिर परमेश्वर ने उन्हें एक शरीर होने दिया। और भी, परमेश्वर ने आदम को हर पशु व पक्षियों के नाम रखने दिया। परमेश्वर जो स्वयं सच्चा और भला है और मनुष्य को अपने बारे में, संसार के सभी चीजों के बारे में और आत्मिक राज्य के नियम के बारे में बताया। परमेश्वर ने मनुष्य को अच्छाई और सच्चाई की शब्दों के बारे में बताया, आदम परमेश्वर के शब्दों को माना और एक लम्बे समय तक एक आत्मिक मनुष्य के रूप में शान्ति से जीवन बिताया।

जैसे परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया, "फुलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो। और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर सब रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो," आदम और हव्वा का वंश फैला और उन्होंने अदन की वाटिका में सब पर शासन किया। (उत्पत्ति 1:28)

2. सर्प के द्वारा प्रलोभन दिए जाने के द्वारा मनुष्य ने अनाज्ञाकारिता की।

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, उसको आशीष दी और बहुत सारा प्यार भी दिया। लेकिन परमेश्वर ने एक काम ना करने से मना किया कि तुम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को मत खाना जो कि परमेश्वर की संप्रभुता का प्रतीक है। इसके अलावा, परमेश्वर ने उन्हें व उनके बच्चों को प्रचुर मात्रा में जीवन व्यतीत करने के लिए स्वतंत्रता दी।

यद्यपि, एक लम्बे समय के बाद मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करना आरम्भ कर दिया। इसी समय, शैतान शत्रु जो इस मौके की तलास में था सर्प के रूप में मनुष्य को परीक्षा में डाला। उस समय सर्प और मनुष्य काफी घनिष्ठ थे क्योंकि सर्प लम्बा, साफ, मुलायम और गोलाई में था इसलिए शैतान शत्रु ने सर्प के द्वारा जो सब पशुओं से धुर्त था और मनुष्य का घनिष्ठ था उसके द्वारा मनुष्य को परीक्षा में डाला।

यहां तक कि आज भी हम देखते हैं शैतान मनुष्य से उसके करीबी मित्रों से और चीजों के द्वारा पाप करवाता है।

शैतान मनुष्य को पाप करने के इरादे से परिक्षा में डाल सकता है इसलिए हमें सर्वदा प्रार्थना करते रहना है और वचन की सच्चाइयों को खोजना है ताकि हम पाप की परिक्षा में ना पड़े। और आज भी लोग सर्प को पसन्द नहीं करते क्योंकि यह मनुष्य के पतन का कारण बना और क्योंकि मनुष्य से शत्रुता की, लोग इसे घृणोत्पादक समझते हैं।

तब कैसे सर्प ने मनुष्य को परिक्षा में डाला और उसने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ दिया?

सर्प जानता था कि परमेश्वर ने मनुष्य को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल खाने को मना किया है इसलिए उसने बड़ी चालाकी से स्त्री से पूछा "क्या परमेश्वर ने सचमुच यह कहा है तुम लोग हर वृक्ष का फल नहीं खा सकते। तब स्त्री ने कहा इस वाटिका के वृक्ष के फल हम खा सकते हैं पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और ना उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

परमेश्वर ने साफ साफ कहा है, "तुम निश्चय ही मर जाओगे" लेकिन स्त्री ने थोड़ा सा अस्पष्ट जवाब दिया "ऐसा ना हो कि तुम मर जाओ" यह इस बात का सबुत है कि स्त्री ने परमेश्वर की बातों को अपने मन में नहीं रखा और पुरी तरह से विश्वास भी नहीं किया और उस पर शक किया। इसलिए सर्प ने स्त्री को बड़ी तीव्रता और भरोसे के साथ परीक्षा में डाला, उसने कहा कि तुम नहीं मरोगे क्योंकि परमेश्वर स्वयं जानता है कि जिस दिन तुम यह फल खाओगे तुम्हारी आँखे खुल जाएगी और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे और भले और बुरे के ज्ञान को जान जाओगे अंत में मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ दिया और वर्जित फल खा लिया (उत्पत्ति 3:1–6)।

यहां तक कि आज भी शैतान बड़ी चालाकी के साथ उन लोगों की जिन्दगी में काम करता है जिनको परमेश्वर के वचन पर भरोसा नहीं है। उदाहरण के लिए, वो पुछ सकते हैं कि तुम्हे सचमुच इतना इकठ्ठा करने की कोशिस की है? क्या तुम्हे सचमुच प्रार्थना में रोने की जरूरत है? यह परमेश्वर के वचनों की सीधी बात है कि बहुत से विश्वास के पूर्वजों ने आज्ञा को माना और उसको अभ्यास में लाया। यही बात परमेश्वर को प्रसन्न करती है लेकिन शैतान यह प्रश्न उन व्यक्तियों से पुछता है जिनको पुरा विश्वास नहीं है और वचनों पर शक करते हैं।

इसलिए (1 पतरस 5:8–9) में लिखा है, सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो इस संसार में है ऐसी ही दुःख सह रहे हैं हम विश्वास की उस चट्टान पर मजबूती से खड़े है जो हिलने की नहीं बल्कि हम विश्वास के साथ जीत को हासिल करेंगे यदि हम शैतान का सामना करेंगे और परमेश्वर की सच्चाई में बने रहेंगे और संसार के साथ समझौता नहीं करेंगे तो परमेश्वर हमारी सुरक्षा करेगा। लेकिन यदि हम सच्चाई में बने नहीं रहेंगे तो शैतान अपना काम शुरू कर देगा।

इसलिए इफिसियों 6:11 में लिखा है कि "परमेश्वर के सारे हाथियार बांध लो कि तुम शैतान की प्रकृतियों के सामने खड़े रह सको" हमें सच्चाई के हाथियारों को पहन लेना है जो परमेश्वर का वचन है, ताकि हम शैतान की तमाम परिक्षाओं के सामने खड़े रह सके और उनको निकाल कर विजय को प्राप्त कर सकें। और जैसा कि मत्ति 5:18–19 में कहा गया है जब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पुरा हुए नहीं टलेगा। इसलिए हमे पता होना चाहिए कि जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए वह स्वर्ग के राज्य के सब से छोटा कहलाएगा परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

3. पाप की मजदूरी के रूप में मनुष्य के जीवन में मृत्यु आ गई।

क्योंकि हव्वा शैतान का सामना नहीं कर सकी। शैतान ने उसकी सोच के अनुसार उसकी उत्सुकता को बढ़ाया। फिर भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष पहले से भिन्न दिखने लगा, कहा, यह खाने में अच्छा है, आँखों के लिए सुहावना है और बुद्धि देने योग्य है इसलिए हव्वा ने फल को खाया और आदम को भी दिया क्योंकि हव्वा ने शैतान को परमेश्वर के वचनों के द्वारा नहीं निकाला और वह शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका के घमण्ड को नियन्त्रण में नहीं कर पाई और अन्त में हव्वा ने परमेश्वर के अनुसार "तुम निश्चय ही मर जाओगे" मनुष्य मरने के लिये हो गया।

कैसे फिर मनुष्य मरने के लिये हो गया?

क्योंकि मनुष्य की देह व शरीर, आत्मा और प्राण का स्वामी है, मर गया इसलिए परमेश्वर के साथ सम्बन्ध टुट गया और देह, प्राण, आत्मा को शैतान के नियंन्त्रण में आने से कष्ट उठाना पड़ा। और अभिशाप के कारण मनुष्य केवल अपने माथे का पसीना ही खा सकता है। स्त्री का बच्चा जन्म देने की पीड़ा बढ़ गई और उसकी चाहत अपने पति की ओर हुई, और वह उसके पति के अधीन रही, धुर्त सर्प जिसने मनुष्य को पाप में गिराया उसको भी श्राप दिया गया कि वह पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी खाता रहेगा।

लेकिन हम सब जानते हैं कि सर्प मिट्टी नहीं खाता, परमेश्वर ने कहा यह निश्चित रूप से मिट्टी खाता रहेगा, ऐसा क्यों?

उत्पत्ति 3:19 कहता है "और माथे के पसीने कि रोटी खाया करेगा और अन्त में मिट्टी में ही मिल जाएगा क्योंकि तु उसी में से निकला गया है तु मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" इसलिए मिट्टी मनुष्य को दर्शाती है क्योंकि वह मिट्टी से बनाया गया है परमेश्वर ने जो आज्ञा सर्प को दि उसका आत्मिक अर्थ यह है कि शैतान उस मनुष्य को खाए जो मिट्टी से बनाया गया है यद्यपि, यदि हम परमेश्वर के बच्चे हैं यदि हम बुराईयां और पाप करते हैं तो शैतान हमारे जीवन में परीक्षा और कठिनाई लाने का काम करता है। लुका 4:5–7 हमें बताता है संसार पर शासन करने का अधीकार शैतान को सौंप दिया गया। इसलिए शैताान गरजने वाले सिंह कि नाईं इस ताक में रहता है कि कब किसको फाड़ खाए और मनुष्य को पाप में गिराए ताकि वह आपत्ति का सामना करे। शैतान ज्यादा से ज्यादा विश्वासियों को भी परीक्षा में डालने का प्रयत्न करता है।

रोमियों 5:12 कहता है, इसलिए जैसे एक मनुष्य के द्वारा पाप इस जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इसी रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।" आदम ने अनाज्ञाकारीता का पाप किया इस प्रकार अध्यात्मिक नियम तय करता है कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है और उसकी आत्मा जो मनुष्य को अन्तकाल की मृत्यु के मार्ग पर जाना पड़ा और परमेश्वर की महिमा तक नहीं पहुंच सका और आदम के कारण भी सभी वंश को पाप का दास होने के कारण मृत्यु का सामना करना पड़ा। आमीन

विश्वास की स्वीकारोक्ति

1. मानमिन सेन्ट्रल चर्च विश्वास करता है कि बाइबल परमेश्वर का कहा वचन है जो उत्तम और दोषरहित है।
2. मानमिन सेन्ट्रल चर्च एकता और त्रिएक परमेश्वर; परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्रआत्मा के कार्य में विश्वास करता है।
3. मानमिन सेन्ट्रल चर्च विश्वास करता है कि केवल यीशु मसीह के पवित्र लहू द्वारा हमें हमारे सभी पापों से छुटकारा मिला है।
4. मानमिन सेन्ट्रल चर्च यीशु मसीह के पुनर्जीवन और पुनरूत्थान, दूसरा आगमन, सहस्राब्दी और अनन्त स्वर्ग में विश्वास करता है।
5. मानमिन सेन्ट्रल चर्च के सदस्य 'प्रेरितों का धर्मसार' के अनुसार अपना विश्वास स्वीकार करते हैं, प्रत्येक समय वे साथ आते और शब्दशः पर विश्वास करते हैं। ''क्योंकि वह (परमेश्वर) स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।'' (प्रेरितों 17:25) ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' (प्रेरितों 4:12)

Manmin News
Published by Manmin Central Church
235-3, Guro-dong, Guro-gu Seoul, Korea (P.O. 152-848)
Tel : 82-2-818-7047 Fax : 82-2-818-7048
http://www.manmin.org/english
Publisher : Dr. Jaerock Lee Managing Editor : Geumsun Vin
Manmin International Seminary Delhi Campus
Post Box # 3668, Lajpat Nagar, New Delhi-110024
Tel : 011-2745 1030 E-mail : indiamanmin@gmail.com

चिन्ह और चमत्कार

मानमिन सेन्ट्रल चर्च में अद्भूत चिन्ह, चमत्कार और सामर्थ्यीपूर्ण कार्य स्थापना दिवस से ही हो रहे हैं। जहाँ कहीं भी मानमिन नाम के साथ यहां तक कि चर्च और उसके शाखा कलीसिया के द्वारा परमेश्वर के काम हुए वहाँ अनेकों प्रकार के वर्षाधनुष दिखाई दिये, और यह प्रमाण है कि परमेश्वर इस कलीसिया के साथ है। वरिष्ठ पास्टर रेव. डा. जैरॉक ली के द्वारा, सूखा पीड़ित क्षेत्रों में बरसात हुई, आँधी और तूफान कमजोर हुई और मिट गई, अंधे देखने लगे, गूंगे बोलने लगे, मरे हुए पुनः जीवन प्राप्त किए, असाध्य बीमारियों से चंगाई हुई। और कलीसिया ऐसी सामर्थ्यीपूर्ण कार्यों द्वारा परमेश्वर की महिमा की।

मानमिन सेन्ट्रल चर्च प्रारम्भिक चर्च की तरह

परोपकारी कार्य

मानमिन सेन्ट्रल चर्च के सदस्य, अपने उन पडोसियों में सुसमाचार प्रचार करते हैं जो अपेक्षित हैं या परेशानी में हैं। कलीसिया जो बृद्ध व्यक्ति अकेले रहते हैं उन्हें जीविका–खर्च और छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है। और लूक मेडिसिन मिशन के सदस्य जो डाक्टर हैं उन्होंने मुफ्त जांच व चिकित्सा के द्वारा सामाजिक कल्याण में अपने आपको समर्पित किया है।

प्रार्थना और स्तूति प्रशंसा

प्रत्येक रात्रि होनेवाली डानिय्येल प्रार्थना सभा में सदस्य धार्मिकता और स्वर्गराज्य के लिए प्रार्थना करते हुए। यह भी, कला प्रस्तूति समिति अपने विशेश प्रदर्शनों से विदेश के क्रूसेड़ों में परमेश्वर की महिमा करती हैं। उन्होंने मसीहि रीतिरिवाजों के मूल्यों का अच्छा प्रदर्शन किया है।

धार्मिक जागृति और मिशन कार्य

मानमिन सेन्ट्रल चर्च ने लगातार पुनरूद्धार का अनुभव किया है और एक बड़ी कलीसिया के रूप में बढ़ा है जिसमें 1,20,000 पंजीकृत सदस्य हैं और 9000 शाखा व सहायक कलीसिया है। कलीसिया भिन्न भिन्न प्रसारण माध्यमों से जैसे इन्टरनेट, पुस्तक एवं समाचार पत्रों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार प्रसार किया है। जीसीएन (ग्लोबल क्रिश्चियन नेटवर्क) आत्मिक सन्देशों से परिपूर्ण है और परमेश्वर का सामर्थ्य 3,300 प्रसारकों के द्वारा लगभग 170 देशों में प्रसारित किया जाता है।

‘जीवन की पुस्तक’ में उद्धार प्राप्त किए हुए लोगों के नाम अंकित हैं एवं ‘यादगार की पुस्तक’ में वे कार्य लिखे गये हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है।

दुनिया में बहुत सी पुस्तकें हैं, जैसे उपन्यास, कविता की पुस्तकें तथा निबन्धों के संग्रह आदि। स्वर्गीय राज्य में भी बिल्कुल ऐसा ही है। जीवन की पुस्तक में उन लोगों के नामों की सूचि है जो बचाए गए हैं और यादगारी की पुस्तक जिसमें परमेश्वर को बहुतायत से महिमा देने वाले कार्यों का विवरण है। ऐसे भी पुस्तकें हैं जो मानवीय खेती की ऐतिहासिक घटनाओं की श्रेणियों का अभिलेख रखती हैं; अर्थात समय समय पर परमेश्वर द्वारा प्रयोग किए गए मनुष्यों के वृत्तान्त, अब्राहाम की जीवनी तथा पृथ्वी पर प्रभु यीशु के जीवन के वृत्तान्त की पुस्तकें। जीवन की पुस्तक एवं यादगारी की पुस्तक मुख्यतः मानवीय खेती से सम्बंधित हैं। जीवन की पुस्तक को उन फलों की सूचि कहा जा सकता है जो मानव इतिहास के दौरान उपजे। यादगारी की पुस्तक में मानव कटनी के समय में उपजे अति उत्तम फलों का लेखा है। इन पुस्तकों की छानबीन करने पर, मुझे आशा है कि आप प्रसन्नता अनुभव करेंगे कि आप भविष्य में स्वर्गीय राज्य का आनन्द उठांऐगे।

‘जीवन की पुस्तक’ नीलेपन लिए श्वेत रंग की है। इस पुस्तक में उनके नाम हैं जिन्होंने बिना किसी अपवाद के मुक्ति को प्राप्त किया है। इसमें लेखा है कि व्यक्ति ने किस वर्ष, किस महीने, किस दिन, और किस घड़ी प्रभु यीशु को ग्रहण किया, वह पवित्र आत्मा द्वारा पुनः जन्मा, और परमेश्वर की संतान बना। महान श्वेत न्याय सिंहासन पर ये पुस्तकें प्रमाणों तथा साक्षियों का आधार होंगी। प्रकाशित वाक्य 20:15 कहता है, “और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।” भजन 69:28 में पढ़ते हैं, “उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए और धर्मियों के संग लिखा न जाए।”

प्रकाशित वाक्य 3:5 में लिखा है, “जो जय पाए उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूँगा पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूँगा।” उसका नाम जिसने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करके पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है, उसका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा जाएगा। इसका अर्थ यह है कि उसने मुक्ति प्राप्त कर ली और वह स्वर्गीय राज्य में प्रवेश कर सकता है। परन्तु यदि वह परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चला और प्रभु, प्रभु कहता रहा, तो उसका नाम जीवन की पुस्तक से काट डाला जाएगा। केवल चर्च जाना ही आप को उद्धार के मार्ग पर न ले जाएगा। उद्धार प्राप्त करने के लिए जैसा मत्ती 7:21 में लिखा है, आपको परमेश्वर की इच्छानुसार जीना है, जो परमेश्वर का वचन है। आपको फिलिप्पियों 2:12 के अनुसार डरते और काँपते हुए अपने उद्धार का कार्य को पूरा करना है।

परमेश्वर जीवित प्रभु है, वह हमारे कामों का बदला देता है। आवास एवं पुरस्कार जो आपको स्वर्गीय राज्य में प्राप्त होंगे वे एक दूसरे से भिन्न होंगे, आधार होगा कि जब आप पृथ्वी पर थे, तो आपने स्वयं में कितना प्रभु को प्रतिबिम्बित किया और परमेश्वर के राज्य के लिए विश्वास योग्यता से कार्य किया? वे जो मसीह जीवन, जैसा वे उचित समझते हैं, जीते हैं वे संकुचित रीति से उद्धार पा सकेंगे और बस स्वर्ग में जा पाएंगे, परन्तु वे जो प्रभु को प्रतिविम्बित करते हुए शुद्ध हो गए हैं और परमेश्वर के सारे घराने में आज्ञाकारी रहे हैं, वे स्वर्ग के उत्तम स्थान में वास कर सकते हैं अर्थात नये यरूशलेम में प्रवेश कर सकते हैं। मानमिन के सदस्य बड़े उत्साहपूर्वक नये यरूशलेम की महिमा प्राप्त करने के लिए अच्छी दौड़ दौड़ते आ रहे हैं।

अक्टूबर 2002 में 2002 इण्डिया यूनाइटेड क्रूसेड चैन्नई के मरीना बीच में डा. जैरॉक ली के द्वारा आयोजित की गई थी। जिसमें ‘जबरन धर्मपरिवर्तन प्रतिबंध कानून’ लागू होने के बावजूद 30 लाख लोगों ने भाग लिया था। उसमें भाग लेने वाले अनेकों ने परमेश्वर के अद्भूत चमत्कारी चंगाईयों को अनुभव किए और बहुतों ने मसीह में परिवर्तित हुए। परमेश्वर को महान महिमा मिली।

निर्गमन अध्याय 15 कहता है कि इस्राएल की संतान के मिस्र से निर्गमन के मध्य मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और माराह का कड़ुवा पानी मीठा पानी में परिवर्तित हो गया था। कुछ हजारों वर्ष पश्चात भी, फरवरी 2000 में, मानमिन सेन्ट्रल चर्च के वरिष्ठ पास्टर रेव. डॉ. जैरॉक ली, ने मुआन मानमिन चर्च के लिए प्रार्थना की जिसमें कुछ विषमता थी जैसे जल की आपूर्ति में अत्यंत खारापन था। रेव. जैरॉक ली अपने प्रथम पक्ष में जो पहाड़ों पर था जहाँ पर वह निरन्तर 2 सप्ताह तक विशेष जाग्रति सभा में प्रार्थना रत थे, उन्होंने जल के खारेपन हेतु प्रार्थना की।

5 मार्च 2000 जैसे ही उन्होंने पहाड़ी प्रार्थना पक्ष समाप्त किया, परमेश्वर ने माराह के झरने जैसा आश्चर्यकर्म दिखाया (जो बाइबल में है) और इस नमकीन पानी को मीठे पानी में परिवर्तित कर दिया। उसी दिन से इस पानी के द्वारा दिव्य चंगाई तथा अन्य बलवन्त कार्य होते रहे हैं। परमेश्वर की महिमा हो, बहुत से लोग रोगों तथा दुर्बलताओं से चंगाई पा चुके हैं और अपनी मनोकामनाओं का उत्तर पा चुके हैं।

यहाँ इस संसार में, हमने महान व्यक्तियों तथा यादगार घटनाओं के स्मारक चिन्ह उनकी लम्बे समय तक यादगारी हेतु बनाए हैं। बिल्कुल इसी प्रकार, यादगारी की पुस्तक में वे चीजें अंकित हैं जिनसे प्रभु परमेश्वर को महान महिमा मिली हैं, और इस प्रकार वे सर्वदा याद की जाती रहेंगी। जब लोग पिता परमेश्वर पर भरोसा रखकर और परमेश्वर के नाम को महान महिमा देकर ऐसे कम करते हैं जो मनुष्य की योग्यता के द्वारा करना असम्भव हों, तो ऐसी चीजों का लेखा रखा जाएगा। जब ये किसी एक व्यक्ति द्वारा सम्पन्न होते हैं, तो ये उसके नाम दर्ज किए जाएंगे और जब ये किसी समूह द्वारा किए जाते हैं तो ये समूह के नायक के नाम दर्ज किए जाएंगे। हाँ कुछ आवश्यक भागों का वीडियो लेखा भी रखा जाएगा, क्योंकि यादगारी की पुस्तक में प्रत्येक घटना का क्षण क्षण का विवरण होता है, यह बहुत मोटे आकार की है। जब इसको आत्मिक आँखों से देखा जाता है, तो यह सुनहरे रंग में उभर कर आती है और मुख्य पृष्ठ पर कुछ राजकीय नमूना है। हम इसका मुख्य पृष्ठ ही देखकर कह सकते हैं कि यह एक अमूल्य पुस्तक है।

कुछ भी हो, यादगारी की पुस्तक में नाम दर्ज करवाने के लिए हमारी कम से कम योग्यता यह होनी चाहिए कि हम में परमेश्वर का भय हो। मलाकी 3:16 कहता है, "तब यहोवा का भय मानने वालों ने आपस में बातें की, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।" यहाँ "यहावा का भय" से मुराद है कि हरेक बुराई से बचें और शुद्ध बनें। इसका अर्थ है कि हमें कम से कम विश्वास के चौथे स्तर पर रहना होगा, जिस पर कोई बुराई नहीं पाई जाती। तब हम कम से कम इस योग्य होंगे कि यादगारी की पुस्तक में स्थान पा सकें। (संदर्भ हेतू देखें पुस्तक दी मेजर ऑफ फेथ) जब वे जो परमेश्वर से इस प्रकार डरते हैं, वे प्रभु परमेश्वर को महान महिमा देते हैं, ऐसी घटनाएं यादगारी की पुस्तक में लिखी जाएंगी। मानव इतिहास की ऐतिहासिक अभिप्राय युक्त घटनाएं इस पुस्तक में अंकित की जाती हैं जैसे अब्राहम का इसहाक को बलिदान करना, स्वर्ग से एलिय्याह का अग्नि उतारना जब उसने मूर्ति पूजकों के 850 भविष्यद्वक्ताओं का सामना किया, और दानिय्येल और उसके तीन साथियों का विश्वास के द्वारा विषम परिस्थिति पर काबू पाकर परमेश्वर की महिमा को बहुतायत से प्रकाशित करना। मानमिन सेन्ट्रल चर्च के भी बहुत से आश्चर्य से भरे कार्य हैं जो यादगारी की पुस्तक में लिखे जा सकते हैं।

कलीसिया की स्थापना ही से जैसा यूहन्ना 4:48 में लिखा है परमेश्वर ने मानमिन के सदस्यों को असंख्य चिन्ह और अद्‌भुत कार्य दिखाए हैं, और भजन 62:11 में जैसा है, परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य दिखाई। चिन्हों तथा अद्‌भुत कार्यों में से एक मुआन मीठा पानी का मामला है जो ऐसी घटना है जिसे सदा स्मरण किया जाता रहेगा। 5 मार्च 2000 को मुआन मानमिन चर्च का बहुत ही खारा समुद्री जल डॉ. जैरॉक ली की प्रार्थना के द्वारा मीठे स्वच्छ जल में परिवर्तित हो गया था। पिता परमेश्वर ने मुआन मानमिन चर्च के सदस्यों की जलापूर्ति हेतु नमकीन पानी को मीठे पानी में बदल दिया, यहाँ सदस्यों को ताजे पानी की कमी थी। परमेश्वर ने यहाँ तक इस पानी को आशीषित किया है कि जिन्होंने विश्वास के साथ इस पानी को पिए हैं या लगाए हैं तो बहुतेरे रोगों से चंगाई प्राप्त किए हैं।

असंख्य लोगों ने न केवल कमजोर दृष्टि और भाँति भाँति के रोगों से चंगाई पाए हैं, जब उन्होंने मुआन के मीठे पानी को पिया या लगाया, बल्कि बहुतेरे लोगों ने अद्‌भुत कार्यों का अनुभव किया; जैसे टूटी हुई मशीन इस पानी को लगाने से चल पड़ी और बहुत से लोगों ने इस पानी के द्वारा अपनी मनोकामनाओं का उत्तर पाया है। इसके अतिरिक्त जब यह मुआन मीठा जल पौधों तथा पशुओं को दिया गया तो पौधों ने अत्यधिक फसल उपजाए। मुआन मीठा पानी का नमूना अमेरिका के स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग FDA (Food and Administration) को परिक्षण हेतु भेजा गया तो विभाग ने इस पानी को बढ़िया श्रेणी का खनिज पदार्थ युक्त पानी घोषित किया। यह पानी फ्रांस और जर्मनी के विश्व प्रसिद्ध पानी की तुलना में तिगुना अधिक कैलशियम युक्त सिद्ध हुआ। परिणाम स्वरूप असंख्य लोगों ने मुआन मीठा पानी का दर्शन कर परमेश्वर की सामर्थ्य का अनुभव प्राप्त किया है।

सन् 2000 से ही वरिष्ठ पास्टर जैरॉक ली ने युगाँडा, केन्या, पाकिस्तान, फिलिप्पिन, होन्डूरास, भारत, रूस, पेरू, न्यूयार्क शहर (अमेरिका), इस्राएल के यरूशलेम, और एस्तोनिया में मसीही महोत्सव आयोजित कर अनगिनत आत्माओं को उद्धार का मार्ग दिखाया है। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि सृजनहार परमेश्वर जीवित है, प्रभु यीशु हमारा बचानेहारा है, तथा बाइबल ही उचित और परमेश्वर का वचन है।

विशेषकर भारत में सम्पन्न 2002 का इण्डिया यूनाईटेड क्रूसेड जिसे डॉ. जैरॉक ली ने कराया, वह स्मरण किया जाता रहेगा एक ऐसे महान समागम के रूप में जिसने भारत के मसीही इतिहास में असंख्य लोगों को आकर्षित किया। इसने सभी कलीसियाओं को एक सूत्र में बाँधा और भारत में एक विशालतम रैली के रूप में चिन्हित किया गया। बहुत से लोगों ने रोगों से चंगाई पाई और मसीहत को ग्रहण किया। क्योंकि भारत का यह यूनाईटेड क्रूसेड भारत के टीवी प्रसारकों ने पूरे भारत में सीधा प्रसारित किया था और इन्टरनेट के माध्यम से पूरे विश्व में इसका प्रसारण हुआ था, अतः असंख्य लोगों ने उद्धार पाया।

डॉ. जैरॉक ली ने सितम्बर 2009 में यरूशलेम के इन्टरनेशनल कन्वेन्शन सेन्टर (ICC) में, "परमेश्वर महान है" के शीर्षक से इस्राएल यूनाईटेड क्रूसेड सम्पन्न कराया। 36 देशों के लोगों ने और स्थानीय लोगों ने इस में भाग लिया, जिसे ऐनलेस, सीएनएन, टीवीएन रशिया, डिजीटल कॉन्गो, और जीसीएन ने सीधा प्रसारित किया। यह रिकार्ड भी किया गया, और लगभग 220 देशों में पब्लिक टीवी, केबल ब्रॉडकास्टर, सहित डे–स्टार मिराकल टीवी और हैवन टीवी द्वारा प्रसारित भी किया गया। इस्राएल सुसमाचार की जननी है, जहाँ पर प्रभु यीशु पैदा हुआ और एक उद्धारकर्ता के रूप में अपनी निश्चित सेवा पूरा किया। परन्तु अब तक वहाँ के लोग मसीहा की बाट जोह रहे हैं। डॉक्टर जैरॉक ली ने उत्साहपूर्ण उदघोषणा की कि यीशु ही प्रतिज्ञात मसीहा और उद्धारकर्त्ता है। संदेश के पश्चात, उन्होंने मंच से प्रार्थना की। बहुत से लोगों ने रोगों से चंगाई प्राप्त किए और परमेश्वर को महान महिमा दी। इसी समय मानमिन सेन्ट्रल चर्च ने एक बलवंत इच्छा रखी कि एक भव्य आराधनालय निर्माण किया जाए।

सन् 1982 में जब कलीसिया की शुरूआत हुई, शुक्रवारीय पूर्णरात्री प्रार्थना सभा में परमेश्वर ने 17 सदस्यों को भव्य आराधनालय का एक दर्शन दिखाया था। भव्य आराधनालय केवल एक ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर बहुत से लोग एकत्र हों और परमेश्वर की उपासना करें। परन्तु यह संसार की एक महान आराधनालय भी होगा और उनके द्वारा इसका निर्माण होगा जो परमेश्वर की महिमा हेतु उससे प्रेम करते हैं। पुराने नियम के समय में परमेश्वर ने राजा सुलेमान से अपना सुन्दर आराधनालय निर्मित करवाया था ताकि समस्त जातियों में उसकी महिमा प्रकाशित हो। भव्य आराधनालय परमेश्वर की बुद्धि तथा प्रेरणा से निर्मित होगा जो मानवयोग्यता से परे हो और नये यरूशलेम के मन्दिर का प्रतिरूप हो, लोग इसे देखकर ही सृजनहार परमेश्वर का गौरव अनुभव करेंगे। अनगिनत संख्या में लोग, भव्य आराधनालय में अभिलाषित हृदय के साथ संसार भर से इकठ्ठे होंगे, सृष्टि के प्रावधान को जानेंगे, और परमेश्वर को महिमा देंगे और उसकी प्रशंसा करेंगे। सबसे बड़ी बात कि परमेश्वर स्वयं इस आराधनालय का कार्य करेगा, जो उनकी संतान जिन्होंने स्वयं में उसको प्रतिबिम्बित किया है तथा अपने आप को शुद्ध किया है, उसके प्रति प्रेम स्थापित करेंगे और विश्व में परमेश्वर की महिमा प्रकाशित करेंगे। इसके अतिरिक्त यह यादगारी की पुस्तक में मानव–कटनी को एक महान फल स्वरूप लिखा जाएगा। इसी रीति से अद्‌भुत बलवंत कार्य, जो मानव–कटनी के अतिउत्तम फल हैं, होते रहेंगे और विश्व में परमेश्वर के अमूल्य नाम को आदर और महिमा मिलेगी।

जब तक तमाम जातियों द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं

Part 1.

'जैसे धुंधला कोहरा उसके जीवन से उठाया जा रहा है इस प्रकार एक मनुष्य के लिए आश्चर्यकर्म हुआ।
"परमेश्वर वास्तव में जीवित है।"

ऐसा मार्च 1968 में श्री जैरॉक ली के साथ हुआ, जब उनको परमेश्वर की कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने अपने विवाह की उत्साहयुक्त घरेलू पार्टी में अत्याधिक मदिरा पान किया जिसके कारण उनके पेट में ऐंठन हो गई। उसके पश्चात उनका पेट दिन ब दिन दुर्बल होता चला गया और बहुत सी उलझने बढ़ गई। सात वर्षों तक उन्होंने चंगा होने के बहुत यत्न किए, परन्तु सब बेकार गया। उनकी माँ ने वह सब किया जो उन्हें बताया गया यहां तक कि निराशा में उन्होंने उन्हें मलोत्सर्ग अर्थात विष्टा का पानी तक पीने को दिया। परन्तु वे ठीक न हो सके। बचने की कोई आशा न रह गई थी, और अन्ततः उनकी माँ ने यहां तक कह दिया, "अच्छा है कि तुम शीघ्र मर जाओ!" प्रतिदिन मृत्यु की घाटी की छाया में उनके जीवन की लौ मध्धम होती चली जा रही थी।

एक दिन आया कि प्रेमी परमेश्वर ने अपने प्रेम से भरा हाथ फैलाया। उनकी दूसरी बड़ी बहन उनके घर आई। उनसे भी अर्थीराइटिस के कारण चला नहीं जाता था। उनकी बहन ने उनसे कहा कि वह उनको ह्यून शिनाय चर्च तक ले चलें। यह ज्ञान या बुद्धि कि वह अपने छोटे भाई को धर्मशिक्षा दें, उनको उनकी प्रार्थना के उत्तर में मिला था। वह इस दशा में भी उनको मना न कर सके और एक छड़ी के सहारे बाहर आए। जब वे चर्च में पहुँचे, उनको यह देखकर हैरानी हुई कि बहुत से लोग ऊँचे शब्दों में ज़ोर–ज़ोर से प्रार्थना कर रहे हैं। वह उन लोगों को प्रार्थना करते देखकर असहज अनुभव करते हुए अनिच्छा से ज़मीन पर घुटने टेक लिये। उसी क्षण उनका शरीर गर्म होने लगा और उनको पसीने आने लगे। उनके कान की झिल्ली में अत्याधिक सूजन थी, पहले वह बड़ी मुश्किल से ऊँची आवाज ही सुन पाते थे, परन्तु अब वह हर आवाज को साफ सुन पा रहे थे।

घर वापस आते समय, उन्होंने पाया कि वह छड़ी की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से चल सकते हैं। अगली सुबह उन्होंने पाया कि उनके सारे शरीर में किसी भी बीमारी के लक्षण नहीं है। वे जो एक नास्तिक थे, उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया और अपने सारे रोगों से चंगाई पाई! हाल्लेलूयाह!

अगली सुबह जब वह बीते दिन की हरेक बात याद कर रहे थे कि क्या क्या हुआ, तो उन्होंने पाया कि उनके साथ परमेश्वर का चौंका देने वाला आश्चर्यकर्म हुआ है, और परमेश्वर ने उनको सारे रोगों से चंगाई दे दी है। इस बिन्दु पर उन्होंने कुछ और न करके, यह कहते हुए, "परमेश्वर वास्तव में जीवित है" एक धारणा बनाली।

1992 वर्ल्ड–वाईड एक्सप्लोजन ऑफ होली स्पिरिट क्रूसेड

1993 वाशिंगटन इवानजलिजम क्रूसेड

2000 पाकिस्तान यूनाईटेड क्रूसेड
डा. जॅरॉक ली साथ

पेरू के राष्ट्रपति एलेजन्ड्रो टोलेडो के साथ बातचीत

2006 न्यूयोर्क क्रूसेड
डा. जॅरॉक ली साथ

1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996

Part 2.

उन्होंने स्वर्ग की ओर निहारते हुए
अपने पात्र को शुद्ध किया और हरेक प्रकार की बुराई को निकाल फेंका।

जीवित परमेश्वर से मिलने के पश्चात डीकन जैरॉक ली पवित्र आत्मा से भर गए और परमेश्वर के अनुग्रह से परिपूर्ण हो गए। जिसने उन्हें उस समय बचाया जब वह मृत्यु के द्वार पर पहुँच गए थे, और फिर परमेश्वर ने उन्हें अनन्त जीवन की ओर मार्गदर्शन किया। उन्होंने आनन्द और कृतज्ञता के साथ चर्च जाना आरम्भ कर दिया, और बाइबल अध्ययन पर एकाग्रचित्त हो गए, प्रार्थनारत् रहे, और जितना हो सका अपने पड़ोसियों और मित्रों में सुसमाचार का प्रचार किया। उन्होंने प्रभु को सब से अधिक प्रेम किया, और जो कुछ परमेश्वर ने बाइबल में कहा है, उसका पालन किया।

बाइबल पढ़ते समय जो पद उन्हें पाप पर प्रकाश डालते, वह उनको रेखांकित करते और उपवास के साथ हार्दिक उत्साह से परमेश्वर के वचन का पूरी तरह से पालन करने हेतु वचनबद्ध होकर प्रार्थना में लीन रहते थे। उन्होंने न केवल अपने कार्यों से पाप को निकाल फेंका परन्तु यह भी कि उन्होंने संघर्ष के साथ पापमय आदतों तथा इच्छाओं को भी निकाल फेंका जो अब तक उनके विचारों में भी न उभरे थे। अन्ततः उन्होंने पाया कि उनमें अब किसी प्रकार की बुराई नहीं रही और अब वह प्रभु में शुद्ध हो चुके थे।

उनकी उत्साही कामना थी कि वह बाइबल में लिखी परमेश्वर की इच्छा को समझें और समझ में न आने वाले बाइबल के पदों का आत्मिक अर्थ जानें। उन्होंने बहुत सी आत्मिक जागृति सभाओं में भाग लिया ताकि परमेश्वर के वचन की गहराइयों को सीखें, परन्तु बाइबल का आत्मा–अभिषिक्त अर्थ समझने की उनकी तृष्णा न बुझ सकी। जैसे जब्बोक नदी के तट पर याकूब परमेश्वर के साथ प्रार्थना में संघर्ष किया वैसे ही उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि वह बाइबल के बहुत गहरे अर्थों को जानने का ज्ञान प्रदान करे। प्रभु परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी, वह गहरी प्रार्थना में पवित्र आत्मा से प्रेरित हुए और परमेश्वर से बाइबल के अर्थों का ज्ञान प्राप्त किया।

जुलाई 1982 में, पास्टर जैरॉक ली ने सियोल कोरिया में मानमिन चर्च की स्थापना की। उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के नाम से जीवन से भरे हुए संदेश दिए तथा चिन्ह और चमत्कार प्रगट किए, और पवित्र आत्मा के उन कार्यों के द्वारा, उनकी कलीसिया के सदस्यों का परमेश्वर में विश्वास सशक्त हुआ, और उन्होंने चंगाई के आश्चर्यकर्म और आत्मिक परिवर्तन महसूस किया। कलीसिया को एक बार पवित्र आत्मा से भरी कलीसिया माना गया जो वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्धिकरण करती और चिन्हों तथा आश्चर्यकर्मों के साथ आगे बढ़ रही है।

फरवरी 1993 में, उनकी कलीसिया की बढ़ोत्तरी एवं जागृति की मान्यता में 'क्रिस्चियन वर्ल्ड' नामक मैगजीन ने उनकी कलीसिया को विश्व की 50 बड़ी कलीसियाओं में चयनित किया। इस मान्यता से कृतज्ञ होकर उन्होंने अमेरिका में विशेष सेमिनार और क्रूसेड आयोजित किए। यह अमेरिका, जापान, तन्जानिया तथा अर्जेन्टीना सहित बहुत से देशों के पास्टर्स कान्फ्रेन्स और चंगाई क्रूसेड के निमन्त्रण का आरम्भ था।

किया जाता, पवित्र आत्मा के कार्य नहीं रूकेंगे।

1995 पीसफुल रियूनिफिकेसन जुबली क्रूसेड (योईडो स्कायर)

2003 रसिया मिराकल फेस्टिवल
डा. जेरॉक ली के साथ

2010 एस्तोनिया मिराकल हीलिंग क्रूसेड
डा. जैरॉक ली के साथ

2009 इजरायल यूनाईटेड क्रूसेड डा. जॅरॉक ली साथ
(यरूशलेम के अन्तराष्ट्रीय कॅन्वेशन सेन्टर में)

Part 4.

जिस प्रकार जल समुद्रों पर छा जाता है, इसी प्रकार यीशु मसीह के सुसमाचार का विश्व के कोने कोने में प्रचार करना

हमारे विश्वासी जीवन का मुख्य लक्ष्य उद्धार पाना और स्वर्ग में प्रवेश करना है। मनुष्य के पाप दो श्रेणियों में बांटे गए हैं; जन्मजात पाप एवं जानबूझ कर किए गए पाप जो एक मनुष्य अपने जीवन में करता है। कोई भी व्यक्ति जिसके पाप क्षमा नहीं किए गए, अवश्य ही वह नरक में झोंका जाएगा और वहां सदा पीड़ित रहेगा। बाइबल सत्यापित करती है कि स्वर्ग और नरक वास्तव में विद्यमान हैं और बहुत से लोग अपने आत्मिक रूप से स्वर्ग और नरक से आमना–सामना होने की साक्षी देते हैं। डॉ. जैरॉक ली ने अपनी उत्सुक प्रार्थनाओं में स्वर्ग एवं नरक के गहरे विवरण प्राप्त किए हैं, और उनकी साक्षियाँ उनकी पुस्तकों 'नरक' और 'स्वर्ग (दो भाग–प्रथम तथा द्वितीय)' में पाई जाती है।

परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य डॉ. जैरॉक ली को प्रदान की, क्योंकि उन्होंने केवल उसके वचन की आज्ञाओं का पालन किया और पवित्र आत्मा के फलों से फलवन्त हुए। यहाँ तक कि परमेश्वर ने उनके माध्यम से असाधारण आश्चर्यकर्म भी प्रदर्शित किए; जैसा प्रेरितों 19:11–12 में दर्ज है। जब रूमाल और अंगोछे पौलुस प्रेरित के शरीर को छुआ कर रोगियों पर रखे जाते थे तो उनके रोग चले जाते और दुष्ट आत्माएं निकल जाती थीं। इसी रीति से जब सहायक पास्टर रोगियों के लिए डॉ. जैरॉक ली के प्रार्थना किए हुए रूमाल के साथ प्रार्थना करते, बहुत से लोग दुष्ट आत्मा के बन्धनों से विभिन्न रोगों की पीड़ा से मुक्त हो जाते हैं।

विश्वभर में उनकी सशक्त सेवकाई को पहचाना गया है। उन्हें बहुत बड़ी रशियन पोर्टल साइट www.invictory.org और अंग्रेजी वैबसाइट www.christian telegraph.com के द्वारा वर्ष 2009 तथा 2010 का "बहुत प्रभावशाली मसीही आगुआ" के रूप में मान्यता दी गई है। समाचार एसेंसियों ने उनको 'सन् 2010 का मिशनरी' और '2009 का टीवी प्रचारक' का नाम दिया है।

बिल्कुल वैसे ही जैसे प्रभु यीशु ने बहुत से चिन्ह तथा आश्चर्यकर्म प्रदर्शित किए ताकि लोगों के विश्वास में सहायक हों, इसी प्रकार डॉ. जैरॉक ली की सेवकाई मुख्यतः चंगाई के आश्चर्यकर्म, चिन्ह और अद्भुत कार्यों से परमेश्वर के अस्तित्व को तथा बाइबल की प्रमाणिकता को सिद्ध करती है। वह सदा अंगीकार भी करते हैं कि सामर्थ्य परमेश्वर की है और उनकी सशक्त सेवकाई का स्रोत परमेश्वर उनके साथ उपस्थिति है, और हर चीज जो उन्होंने किया है वह प्रभु यीशु मसीह के नाम के द्वारा सम्भव हुई है।

1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011

Part 3.

पवित्र आत्मा की बलवंत एवं अति वेग पूर्ण सामर्थ्य के माध्यम से पाँच गुणा पवित्रता का सुसमाचार पृथ्वी के सभी छोर में फैल रहा है।

रेव. डॉ. जैरॉक ली ने आत्मिक प्रेम की गहराई को पूर्ण किया। उसी प्रेम के साथ उन्होंने, उनको जिन्होंने उनके साथ बुरा किया अपनी भलाई से बदला दिया और प्रार्थना में उनको आशीष दी। इससे परमेश्वर के सिंहासन को स्पर्श किया और परमेश्वर ने उनको अद्भुत सामर्थ्य प्रदान की।

सन् 2000 में उन्होंने विदेशों में बड़े बड़े क्रूसेड आयोजित करना आरम्भ किया, दर्जनों देशों में जहाँ कहीं भी उन्होंने क्रूसेड आयोजित किया, परमेश्वर ने हैरान कर देने वाले आश्चर्यकर्म प्रगट किए और उनकी सशक्त चंगाई सेवकाई ने विश्व के प्रसिद्ध प्रसारण कर्त्ताओं तथा पत्रकारों को आकर्षित किया। उनका यूगांडा होली गॉस्पल क्रूसेड 2000 जो कम्पाला पार्क में आयोजित किया गया, को सीएनएन ने प्रसारित किया। उनका चार दिवसीय भारत क्रूसेड "मिराकल हीलिंग प्रेयर फैस्टिवल 2002" 30 लाख से अधिक लोगों को एक साथ लेकर आया और प्रभु यीशु मसीह के नाम से जो चंगाई के आश्चर्यकर्म हुए इससे विषयक स्थान धर्म रूपान्तर से भर गया। उनका रशियन क्रूसेड 2003 निर्धारित आयोजनों में से एक था जिसमें सैन्ट पीटर्सवर्ग शहर की 300वीं वर्षगांठ मनाई जा रही थी। '2006 न्यूयार्क क्रूसेड' जो मडीसन स्क्वायर गार्डन जो संसार के प्रसिद्ध रंगभूमियों में से एक है, में आयोजित हुआ, यह 176 देशों में सीधा प्रसारित किया गया। सन् 2009 में उन्होंने "परमेश्वर महान है" शीर्षक से इस्राएल यूनाईटेड क्रूसेड आयोजित किये जिसका आयोजन आईसीसी यरूशलेम में हुआ, वहां उन्होंने घोषणा की कि यीशु मसीह ही केवल उद्धारकर्त्ता और मसीहा है। सन् 2010 में भी एस्तोनिया मिराकल हीलिंग क्रूसेड में उन्होंने अपने जीवन से भरे संदेशों तथा पवित्र आत्मा के धमाकेदार कार्यों के माध्यम से घोषणा की कि परमेश्वर जीवित है।

डा. जैरॉक ली के द्वारा पाँचगुणा पवित्रता के सुसमाचार के प्रचार करने पर संसार के पास्टर्स एवं जागरूक प्रचारकों ने उनका हार्दिक सम्मान जताया। यह इसलिए है क्योंकि पवित्रता के सुसमाचार की विशेषता पुनःजन्म, शुद्धिकरण, दिव्य चंगाई, पुनःउठना, तथा दूसरे आगमन में सामर्थ्य है कि वे मनुष्य की आत्मा, प्राण तथा देह को बदल दें और नया बना दें। डॉ. ली यह शिक्षा देते रहे हैं कि प्रभु यीशु में विश्वासीजन केवल अपने आपको अपने कर्मों द्वारा किए गए पापों से ही नहीं अपितू, उन पापों से जो हृदय की गहराई में छूपे हैं, उन सबसे परमेश्वर के अनुग्रह, बल तथा पवित्र आत्मा की सहायता द्वारा शुद्ध कर सकते हैं और यीशु मसीह की हार्दिक इच्छा को पूरा कर सकते है।

रेव. डॉ. जैरॉक ली सदा जोर देकर कहते हैं कि हरेक विश्वासी आत्मिक विश्वास का उत्तम स्तर अपने शुद्धिकरण की अवस्थानुसार प्रात्प कर सकता है और वह अपने विश्वास के उत्तम स्तर के अनुसार स्वर्ग में अच्छा स्थान प्राप्त कर सकता है।

•फोटो 1: जीसीएन की प्रसारण केन्द्र एम्पायर स्टेट बिल्डिंग •फोटो 2: डा. जैरॉक ली 10 अति विशष्ट मसीही आगुओं में चयनित और वर्ष के मिशनरी के रूप में •फोटो 3: सेबू, फिलिपिन में डब्लूसीडीएन द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय मेडिकल कॉन्फ्रेन्स •फोटो 4: रोम, इटली में डब्लूसीडीएन द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय मेडिकल कॉन्फ्रेन्स •फोटो 5: 2011 सियोल अन्तराष्ट्रीय पुस्तक मेले में यूरीम बुक्स् की बूथ •फोटो 6 और 7: लाटिन अमेरिका में एमआइएस (मानमिन अन्तराष्ट्रीय सेमिनरी) द्वारा 'क्रूस का सन्देश' सेमिनार आयोजित

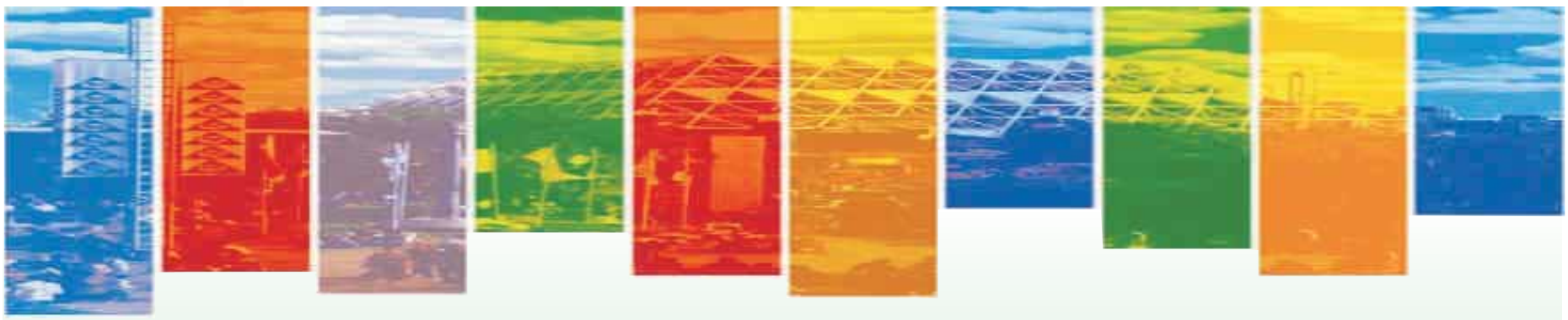

We request you to visit us in:
Hall No. 7, Pragati Maidan, New Delhi

Seminar
29th February 2012
Time : 5.00pm to 7.00pm
Hall No. 6 (Conference Room)

URIM BOOKS
SOUTH KOREA

Contact: 9971624386, 9910082177
011-27451030

20TH BIENNIAL NEW DELHI

WORLD BOOK FAIR

25 February to 4 March 2012 | Pragati Maidan, New Delhi | Daily 11.00 a.m. to 8.00 p.m.

Organised by:

दिल्ली मानमिन चर्च

Sr. Pastor Rev. Dr. Jaerock Lee
(Manmin Central Church, South Korea)

शाखा चर्च: मानमिन सेन्ट्रल चर्च, सियोल, दक्षिण कोरिया

संस्थापक: वरिष्ठ पास्टर रेव. डा. जैरॉक ली

आप सभी को आमंत्रित करती है।

Grand Sanctuary

यदि आप अपने जीवन में बीमारियों एवं समस्याओं से परेशान हैं और छुटकारा पाना चाहते हैं तो, आप हमें प्रार्थना के लिए सम्पर्क कर सकते हैं या रविवार की प्रार्थना सभा में सम्मिलित हो सकते हैं।

प्रार्थना का दिन रविवार समय सुबह 9.30 बजे चंगाई सभा और दोपहर 11.30 बजे प्रार्थना सभा

स्थान: आजादपुर मेट्रो स्टेशन के सामने। सम्पर्क करें: 9971624368

MANMINTV

Tel : 82-2-824-7107
Fax: 82-2-813-7107
www.manmintv.org
e-mail:info@manmin.org

GCN GLOBAL CHRISTIAN NETWORK मानमिन टीवी

Satellite : Thaicom5
Downlink Frequency : 3551
Symbol Rate : 13333 FEC : 3/4
Video PID : 2006
Audio PID : 3006 (English)
for more visit : www.manmin.or.kr

MIS
Manmin International Seminary
Delhi Campus

Tel : 011-2745 1030
Post Box # 3668
Lajpat Nagar, New Delhi-110024
e-mail:indiamanmin@gmail.com

WCDN
World Christian Doctors Network

Tel : 82-2-818-7039
Fax: 82-2-830-5239
www.wcdn.org
e-mail:wcdnkorea@gmail.com